

माँ रौ दुद सारिउं कौइ बौड़िया



Bangani

माँ रौ दुद सारिउं कौइ बौड़िया

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-

NLCI

बंगाणी मसी समिति समू

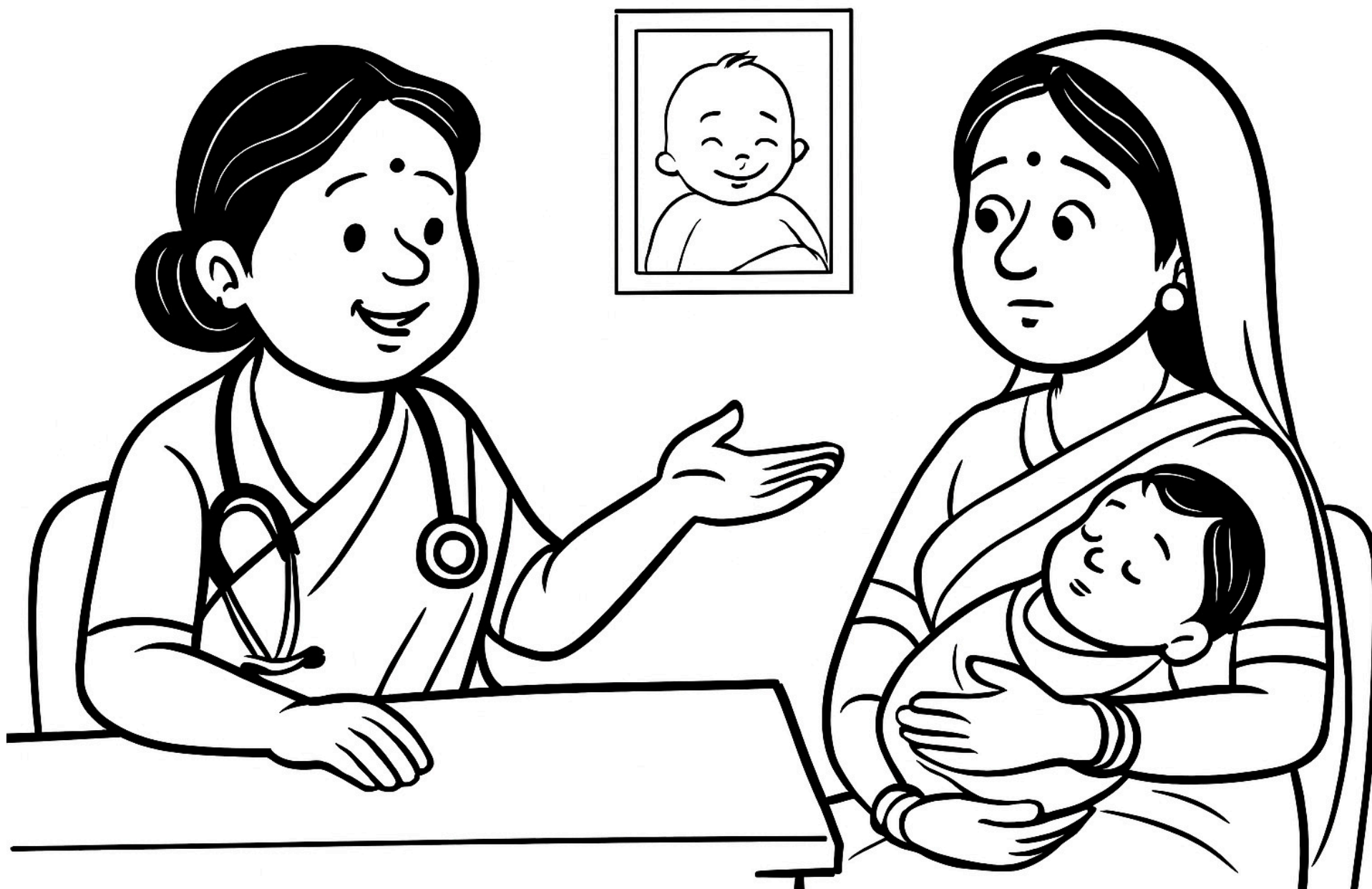
दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥



एक गाउँ दि सुनिता नौउँ री एक
छेउड़ रौयै थी, सै गौरकेड़ी थी।
गाउँ री कुछ छेउड़ियै तीं सौमज़ाण
थै, कि माँ दूद पेटारौउँ रवी औमरित
औयै।



कुछ दूध बासियै सुनिता औळखुइ
तिरौ माउँ उवौ । डौक्टेरेइ बोलौ
कि माउँ रौ जनम औणै बासियै
तेत्राइ माउँ खि माँ रौ दूद ज़ौरूरी
जा देणनै ।



तैबै सुनिताइ पैहली बैरै आपड़ौ माउं
कौइ दुद पियाऔ। सेउ माउं बी
आपड़ी आमा री अंगारिदि बौरी
खुश थौ।



दादी बी सुनिताइ सौमज़ा थी कि
औगौणिकै रै 6 मीनै ज़ौउं माउं खि
खाली माँ रौ ई दुद देणनै चाइं औज़ि
दुद कौइ औलावा कुछ बी ना
देणनौ चाइं।



सुनिताइ दादी कौइ पुछ्छौ कि का
माउँ खि पाणी बी देणनै जा।
दादीएइ बोलौ ना आं, माँ रौ दुद ई
तेसखि पाणी औज़ि खाणौ औयै।



सुनिता रोज़ बौक्ते बौक्ते दि आपड़ौ
माउँ कौइ दुद पिया थी। औज़ि माउँ
बी बिलकुल ठीक थौ।



एक दूस तीं काइ कुछ छेउड़ियै
आई, सै तियारी बोलदि लागी, कि
कुछ बौज़ारै रौ दुद औज़ि दौळिया
बी दैऔ एसखि। पर दादीएइ
बोलौ ना आं ईबी खाली माँ रौ दुद
ई देणनौ।



सुनिता कै केत्रा केत्रा काम कौरदु
बैरै आपड़ै माउं री चिन्ता औयै थी।
तैबै बी सै आपड़ौ माउं कौइ बौक्ते
दि दुद पिया थी।



6 मीनै बासियै सुनिता रौ माउँ ओरु
पोरु गिसरुन्दै लागी गोऔ थौ, सेउ
आफुइ मुस्कुरायै थौ औजि खेलै
बी थौ।



तेतबासियै सुनियाइ आराम आराम
कौइ थोड़ौ औळखौ खाणौ देणनौ
शुरु कियौ, औज़ि साथी दुद बी दै
थी।



गाउँ री दुजी छेउड़ियै बी सुनिता
कौड़ शिक दि लागी गोए थै। सै
आपड़ै पेटारौउँ कौड़ 6 मीनै ज़ौउँ
खाली दुद ई पियान्दै लागै।



सुनिताइ बोलौ कि माँ रौ दुद
पेटारौउं खि सारिउं कौइ बौड़िया
औयै । माउं बी औस्टै रौ थौ लागौ ।
औज़ि जेती तेत्कै थै सै सारै ज़ौणै
खुश उवै ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....,धन्यवाद,.....

